नाम :– डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

महाविद्यालय का नाम :– दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

संकाय :– कला

पद का नाम :– सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग

विषय :– "मध्यकालीन काव्य में जीवनमूल्य और समकालीन परिवेश"

दिनांक :– 21/07/2025

डॉ. लोकेश्वर प्रसाद सिन्हा

मध्यकालीन काव्य में जीवनमूल्य और समकालीन परिवेश

डॉ. रीता श्रीवास्तव द्वारा लिखित आलोचनात्मक कृति **''मध्यकालीन काव्य में जीवन मूल्य और समकालीन परिवेश''** शोधपरक एवं महत्त्वपूर्ण कृति है। वैसे तो मध्यकाल पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है परन्तु यह काल इतनी विविधताओं से भरा हुआ है कि प्रत्येक बार एक नया चिन्तन उभर कर आता है। लेखिका ने यह पुस्तक मध्यकालीन जीवन मूल्यों का विश्लेषण करते हुए आधुनिक युग में उनकी प्रासंगिकता को ध्यान में रखते हुए लिखी है। उन्होंने मध्यकालीन अवधारणा को भारतीय संस्कृति का मूल मंत्र **'सर्वे भवन्तु सुखिनः'** पर आधारित मानते हुए स्पष्ट करते हुए लिखा है – ''सुखमय जीवन का वही मूल मंत्र है – दूसरों को सुखी कर ही हम सुख पायेंगे। मध्यकाल का साहित्य भारतीय मनीषियों द्वारा निर्दिष्ट सत्यनिष्ठा, अनुशासनात्मकता, मानववाद, सहिष्णुता, समभाव के आदर्श आदि शाश्वत् मूल्यों की स्थापना करता है।

आलोच्य पुस्तक को सात महत्त्वपूर्ण अध्यायों में बांटा गया है। प्रथम अध्याय ''जीवन मूल्य– तात्पर्य, रूप एवं अवधारणा'' विषय से है जिसमें जीवन मूल्य व साहित्य में जीवन मूल्यों की अवधारणा एवं महत्त्व पर प्रकाश डाला गया है। लेखिका ने संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी के अनेक ग्रन्थों के विश्लेषण के पश्चात साहित्य में जीवन मूल्यों की उपयोगिता को आवश्यक माना है। इसके बिना साहित्य का कोई मूल्य नहीं होता। जीवन का कोई ऐसा विषय नहीं है जहाँ जीवन मूल्य आवश्यक न हो। भारतीय व पाश्चात्य समीक्षकों ने भी साहित्य में मूल्यों की स्थिति को आवश्यक माना है। साहित्य में जीवन मूल्यों की उपयोगिता की दृष्टि से यह अध्याय उपयोगी है।

द्वितीय अध्याय **'मध्यकालीन काव्य में जीवन मूल्यों का स्वरूप'** शीर्षक से है। वस्तुतः सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में मध्यकालीन साहित्य ही अपनी सम्पूर्ण परिधि में जीवनमूल्यों को समेटे हुए है। लेखिका ने जीवन मूल्यों में से प्रमुख जीवन मूल्य सत्य निष्ठा, अनुशासनात्मकता, मानववाद, सहिष्णुता, समभाव आदि पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। उन्होंने कबीर, तुलसी, सूफी कवि नूर मोहम्मद, दादू, मलूकदास आदि महत्त्वपूर्ण कवियों के साहित्य का विश्लेषण उदाहण सहित किया है। वस्तुतः यह अध्याय प्रासंगिकता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। यह कहना समीचीन होगा कि मध्यकालीन साहित्य में जीवन मूल्यों की दृष्टि से इस अध्याय में विशद् विश्लेषण हो सकता था परन्तु शीर्षक की दृष्टि से यह अध्याय कुछ लघु जान पड़ता है। तृतीय अध्याय

मध्यकालीन हिन्दी काव्य नाम से है लेखिका ने सम्पूर्ण मध्यकाल का वर्गीकरण किया है तथा समकालीन परिवेश के प्रभाव व उस काल के महत्त्वपूर्ण कवियों के विषय में लिखा है।

शोध का मुख्य विषय **'भक्तिकालीन काव्य में परिव्यक्त जीवन मूल्य'** पर आधारित है। इस दृष्टि से यह अध्याय सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। लेखिका ने इस अध्याय में गहन दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है। उन्होंने निर्गुण, सगुण काव्यधारा के सभी महत्त्वपूर्ण कवियों को लिखा है। सम्पूर्ण भक्तिकाल की आधारशिला ही मानव जीवन मूल्य है। इस दृष्टि से यह हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग कहलाता है। जीवन की परम्परागत रूढ़ियों के प्रति क्रान्तिकारी दृष्टिकोण रखने वाले निर्गुण कवि कबीर के प्रति अपने विचार व्यक्त करते हुए लेखिका ने लिखा है कि कथनी व करनी में एकता समर्थक इस निर्भीक व्यक्ति ने, अनेक कष्ट सहते हुए मानव जीवन को सुधारने के लिए जितने भी रास्ते हो सकते थे अपनाए। मानव जीवन मूल्यों की जितनी प्रतिष्ठा इस सन्त कवि ने कर दिखाई उतनी अन्यत्रा प्रायः दुर्लभ ही है। इसी क्रम में रहीम, नानक, दादू दयाल, मलूकदास एवं रज्जब, सुन्दर दास एवं जायसी के काव्य में इस दृष्टिकोण से विश्लेषण किया है। उन्होंने जायसी के काव्य को सन्तकालीन काव्यधारा में स्थापित मानवमूल्यों के समकक्ष ही माना है। सगुण काव्यधारा को लिया है। इसके प्रमुख कवि तुलसीदास को लेखिका ने भक्तिकाल का सच्चा प्रतिनिधि माना है। लेखिका ने तुलसीदास के काव्य में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक जीवन मूल्यों की स्थापना पर महत्त्वपूर्ण विचार व्यक्त किये हैं। वे कहती हैं ''तुलसी–काव्य के अध्ययन करने पर यह बात सामने आई कि जीवन मूल्यों की जितनी स्थापना इनके काव्य में हुई है, दूसरे किसी कवि में शायद ही देखने को मिले। जीवन का कोई ऐसा क्षेत्रा नहीं है जिस पर तुलसी की पैनी दृष्टि न पड़ी हो।

सगुण काव्यधारा के द्वितीय प्रमुख कवि सूरदास हैं। लेखिका के मतानुसार अष्टछाप के कवि जाति भेद एवं साम्प्रदायिकता के स्पर्श से परे थे। इन कवियों के साहित्य का मूल उद्देश्य समाज सुधार नहीं वरन् ईश्वर भक्ति था। फिर भी इनके काव्य में जीवन मूल्यों का समावेश स्वतः ही हो गया। लेखिका ने अपने विश्लेषण के द्वारा यह सिद्ध किया है कि सूरदास ने स्वयं अपने और सांसारिक विषय वासनाओं में लिप्त व्यक्तियों की बात कहकर प्रकारान्तर से हिंसा अहंकार आदि की हेयता सिद्ध की है। इसी काल के रहीम बड़े कवि थे। रहीम का तो मूलतः जीवन में नैतिक मूल्यों पर ही आधारित था परोपकार को वे बहुत अधिक महत्त्व देते थे। इस प्रकार इस अध्याय में लेखिका ने मध्यकाल की प्रमुख भक्तिकालीन काव्यधारा का बृहद विश्लेषण किया है।

इसी कड़ी में पंचम अध्याय, रीतिकाल में परिव्यक्त जीवन मूल्यों पर आधारित है। प्रकारान्तर से भक्तिकाल के आदर्श जीवन मूल्य रीतिकाल पर भी अपना प्रभाव छोड़ने में सफल रहे। यद्यपि रीतिकाल के दो वर्ग रीतिबद्ध एवं रीतिमुक्त काव्य पर श्रृंगार का आधिक्य देखने को मिलता है पर लेखिका की दृष्टि इस काल के कवियों के द्वारा लिखित साहित्य में उपस्थित जीवन मूल्यों को समेट ले गई। लेखिका ने लिखा है कि इस काल में लगभग सभी कवि विभिन्न सम्प्रदायों में दीक्षित थे। परन्तु उनका किसी विशेष के प्रति आग्रह नहीं था। इस काल के प्रमुख कवि बिहारी यद्यपि श्रृंगार के कवि थे पिफर भी उनके काव्य में दंभ व ढोंग के प्रति अनास्था व्यक्त की गई है। इसी प्रकार अन्य प्रमुख कवि ठाकुर दास, जगजीवन दास, दरिया साहब बिहार वाले, चरनदास, पलटू साहब, नूर मोहम्मद वृन्द बैताल, गिरिधर कविराय एवं दीनदयाल आदि के काव्य आधारित जीवन मूल्यों का उदाहरण सहित लेखिका ने विश्लेषण किया है।

आलोच्य पुस्तक का छठा अध्याय विदेशी लेखकों की दृष्टि में **''मध्यकालीन हिन्दी काव्य''** आलोचना की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। पूर्व में इस पर अधिक काम नहीं हुआ है।

लेखिका ने विदेशी लेखकों, गार्सा द तासी, अब्राहम जार्ज ग्रियर्सन, रेवरेण्ड एडविन ग्रीव्स, पफादर कामिल बुल्के एवं इतिहास विद् विन्सन्ट ए0 स्मिथ आदि विद्वानों के मध्यकालीन साहित्य से सम्बन्धित विचारों का अध्ययन किया है। उनके अनुसार डा0 ग्रियर्सन ने हिन्दी साहित्य के इतिहास में 'द माडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर आपफ हिन्दुस्तान' में सोलहवीं व सत्राहवीं शदी को हिन्दी साहित्य का श्रेष्ठतम युग बताते हुए इसकी तुलना एलिजाबेथ युग से कर डाली। मध्यकालीन साहित्य की समीक्षा की दृष्टि से यह उदाहरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि सूर की श्रृंगारी कविताओं और तुलसी की प्रकृति सम्बन्धी कविताओं के अतिरिक्त यह काव्यकला को सुव्यवस्थित करने का प्रथम प्रयास होने के कारण भी यश प्राप्त है। इसके अतिरिक्त वे टीकाकारों की खान के रूप में मानते हैं और स्वर्णकाल का पटाक्षेप भी इसी कवि के साथ मानते हैं। इस दृष्टि से डा0 ग्रियर्सन की विवेचनात्मक दृष्टि अत्यन्त प्रशंसनीय है। इसी क्रम में लेखिका ने ग्रीव्स के द्वारा 1400 से 1580 ई. के समय को रचनात्मक काल की संज्ञा से अभिनिहित करने के कारणों पर भी प्रकाश डाला है। ग्रीव्स संत साहित्य के प्रशंसक रहे हैं व गार्सा द तासी कबीर के प्रशंसक रहे हैं। इसी प्रकार रीतिकालीन कवियों पर भी इन विदेशी लेखकों ने टिप्पणी की है। वस्तुतः सभी विद्वान रीतिकाल में नीतिधारा के कवियों से प्रभावित है। निष्कर्षतः लेखिका के अनुसार विदेशी विद्वान मध्यकालीन साहित्य में व्याप्त नैतिकता, सदाचार एवं लोक कल्याण की भावना के कारण ही, उसे स्वर्णकाल मानते हैं।

वर्तमान परिवेश में मध्यकालीन जीवन मूल्यों की उपयोगिता व प्रासंगिकता क्या है, सप्तम अध्याय 'राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य में मध्यकालीन हिन्दी काव्य की महत्ता एवं उपयोगिता' में इसकी विवेचना की गयी है। लेखिका ने सम्पूर्ण मध्यकालीन साहित्य में उपस्थित जीवनमूल्यों की प्रासंगिकता को आज के युग में सिद्ध किया है। वास्तव में किसी भी काव्य की उपयोगिता शाश्वत जीवन मूल्यों पर आधारित है। लेखिका ने विभिन्न उदाहरणों के माध्यम से वर्तमान भौतिकवादी युग में भटकते मानव के लिए मध्यकालीन साहित्य सही मार्ग दिखा सकता है।

उपसंहारः–

अन्त में उपसंहार में लेखिका ने सात अध्यायों के निचोड़ को प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार ''भारतीय चिन्तन की अन्तर्यात्राा'', 'स्व' से 'पर' तक समाप्त होती है। मध्यकालीन सन्त कवियों ने अपने काव्य में आधारित जीवनमूल्यों के माध्यम से जो राह दिखाई है, उससे व्यक्ति, समाज, राष्ट्र व सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो सकता है और यही मध्यकालीन साहित्य की प्रासंगिकता है।

♦ ♦ ♦